राज
कॉमिक्स
विशेषांक
मूल्य 20.00 संख्या 231
तांडव
नागराज

संजय गुप्ता पेश करते हैं

तांडव

अग्रज एवं नागराज का कहर में आपने पढ़ा कि तंत्रता नामक एक दुष्ट तांत्रिक ने वेदाचार्य से उस तिलिस्म का तोड़ तिलिस्मघाती हासिल कर लिया, जिसमें वेदाचार्य के पोते एवं तंत्रता के नाती अग्रज का शव सुरक्षित रखा था। तंत्रता उस युवा शरीर में प्रवेश करना चाहता था। नागराज, तंत्रता को रोकने के लिए तिलिस्म के द्वार पर तंत्रता के सहयोगी तालिस्मान से जा टकराया। तंत्रता तिलिस्मघाती लेकर तिलिस्म में प्रवेश कर गया और तालिस्मान ने नागराज को पंगु तिलिस्म में कैद कर लिया। नागराज ने तालिस्मान का तिलिस्म तोड़ डाला। नागू भी नागराज की सहायता के लिए आ गया। तालिस्मान दोनों से एक साथ लड़ने आया लेकिन तभी एक रहस्यमय शख्सियत तिलिस्माचार्य ने वहां आकर उनको चौंका दिया। नागू को तालिस्मान में लड़ता छोड़कर नागराज एवं तिलिस्माचार्य, तिलिस्म के छोटे रास्ते के द्वारा तिलिस्म को पार करने में सफल रहे। तिलिस्म के अंत में नागराज एवं तिलिस्माचार्य के साथ-साथ, तंत्रता भी दूसरे रास्ते से वहां आ पहुंचा। तब नागराज को पता चला कि जिस तिलिस्माचार्य को वह वेदाचार्य का पुत्र शिलादित्य समझ रहा था वह असल में तालिस्मान द्वारा नागराज के साथ भेजा गया एक तिलिस्मी प्राणी था। अब आगे पढ़ें—

कथाः	चित्रः	इंकिंगः	सुलेख एवं रंग सज्जाः	सम्पादकः
जॉली सिन्हा	अनुपम सिन्हा	विनोदकुमार, विट्ठल कांबले	सुनील पाण्डेय	मनीष गुप्ता

... क्योंकि नागराज के पास इच्छाधारी कणों में बदलने की शक्ति है!
मेरा तंत्र तुझे इच्छाधारी रूप में भी अदृश्य नहीं रहने देगा! ...
... और जैसे ही तू अपने असली रूप में आएगा! ...
... वैसे ही हलकाट तेरी हड्डियां तोड़ डालेगा!
तू इससे लड़ता रह, हलकाट! तब तक मैं अग्रज के शरीर में अपनी आत्मा को प्रवेश कराने के लिए तंत्र क्रियाएं शुरू करता हूं!
नहीं तंत्रता! मैं तेरे तंत्र को अग्रज के शरीर तक पहुंचने नहीं दूंगा!
मेरा विशेष नागफनी सर्प तेरे हर तंत्र वार को रोक लेगा!

ओह, सचमुच! अग्रज के शरीर में प्रवेश करने के लिए मुझे तंत्र तरंगों के द्वारा अग्रज के शरीर से संपर्क बनाना होगा! लेकिन ये सर्प ऐसा नहीं होने दे रहा है! ... इसको हटाने का एक ही तरीका है! तेरी मौत नागराज! ... तेरी मौत के बाद तेरे शरीर में रहने वाला ये सांप भी शक्तिहीन हो जाएगा!
ओऽऽऽह! विषफुंकार!
तंत्रता को होश संभालने में काफी वक्त लगेगा!...
...तब तक मैं हलकाट से निपट लूंगा!
तूने मेरे नाम का मतलब समझा नहीं...

मेरा नाम हलकाट है, नागराज! पहले मैं समस्या का हल ढूंढता हूं! और फिर उसकी काट बना डालता हूं!
ओह! इसके दंड से उल्लू पैदा हो रहे हैं!
ढेरों उल्लू! और वे मेरे सांपों को खाने के बाद...
...मुझ पर हमला कर रहे हैं!
क्रियां
ये सिर्फ मुझे पंजों से नोच रहे हैं! चोंच नहीं मार रहे! वर्ना ये गल जाते!
विषफुंकार ही बचाव का एकमात्र रास्ता लगती है!

ओह! फुंकार को ये अपने पंख फड़फड़ाकर हवा में बिखेर दे रहे हैं!
एक तरीका है! सर्पों द्वारा हमला करना होगा!
मैं भी यही चाहता हूं कि ये उल्लू मेरे सांपों को निगल जाएं!
क्योंकि ये मेरे जिन सर्पों को निगल रहे हैं!...
तेरी फुंकार की ही तरह तेरे सर्प भी बेकार सिद्ध होंगे, नागराज!
ये उल्लू, सांपों को तो ऐसे ही निगल जाते हैं!
... वे ध्वंसक सर्प हैं! जो अब उल्लुओं के पेट में जाकर फटेंगे!
अब तू भी बेहोश होने के लिए तैयार हो जा हलकाट!
विष फुंकार!

आऽऽऽह! तेरी विष फुंकार से मेरे दिमाग पर बेहोशी छा रही है! लेकिन मेरा शरीर तेरी फुंकार का पहले हल निकालेगा!...
...और फिर उसकी काट बना डालेगा!
बच हलकाट के हमले से!
आऽऽऽह!
इसकी फुंकार में तो प्रतिविष है!
मेरे विष की काट!
सारे शरीर में कमजोरी की लहर सी दौड़ गई है! ऐसा मेरे शरीर के अंदर का विष नष्ट होने के कारण हुआ है! अब क्या करूं? कैसे रोकूं हलकाट को?
खटचाक
शाबाश, हलकाट! अब एक फुंकार अग्राज की छाती पर बैठे सांप पर भी मार!

नागफनी सर्प भी उस विषनाशक फुंकार को सह नहीं पाया-
आहा! मेरा रास्ता साफ हो गया! अब तू नागराज की आत्मा को बाहर निकाल हलकाट, और मैं अपनी आत्मा को अग्रज के शरीर में डालता हूं!
अब तू मरेगा नागराज! हलकाट के सींगों से मरेगा!...
...आssssह! इच्छाधारी शक्ति प्रयोग करने लायक ताकत भी नहीं बची है!
नहीं मरेगा नागराज! अभी कुछ ही पलों में नागराज अपने आपको संभाल लेगा, और फिर उसकी आंखों में तुझे तेरी मौत दिखेगी हलकाट!

तंत्र वार ? मामूली तंत्र वार ! हलकाट इसका भी हल निकाल लेगा !
आSSS ह !
अब मैं संभल गया हूं, सौडांगी ! तुम मेरे शरीर में वापस आ जाओ ! इस बार हलकाट को कोई मौका नहीं मिलेगा !
नागराज के दांत हलकाट की खाल में जा धंसे-
और हलकाट का शरीर गर्म तवे पर रखे मक्खन की तरह पिघलने लगा-
अब तू बता तंत्रता ! पिटेगा, या आत्मसमर्पण करेगा ?

तेरी जान लूंगा, नागराज! मुझे रोकने की कोशिश मत कर! वर्ना मैंने जो अग्रज का हाल किया था, वही तेरा करूंगा!
तुम्हारा खेल खत्म हो चुका है तंत्रता!
नहीं, नागराज...
अब कौन?
...खेल तो तुम्हारा खत्म हो गया है!
हलकाट! तू... तू तो गल गया था! फिर तू वापस इस रूप में कैसे आ गया?
मेरा शरीर हर बार की काट अपने आप बना देता है नागराज! यही मेरी शक्ति है! इस बार मेरे शरीर ने तेरे विष की काट बनाने में थोड़ा समय जरूर लिया, लेकिन काट बना ली!

और अब तेरी मौत एकदम सामने आ गई है, नागराज! क्योंकि तेरे साथ रहकर मुझे इतना तो पता चल ही गया है कि जैसे ही तेरा विष खत्म होगा, वैसे ही तू भी खत्म हो जाएगा!
फिच्च
और तेरा विष नष्ट करेगी मेरे अंदर भरी हुई तेरे ही विष की काट!
घच्च
आऽऽऽह! आऽऽऽह! मैं 'प्रतिविष' से नहा गया हूं!
ये प्रतिविष मेरे रोम छिद्रों से अंदर जाकर मेरे विष को नष्ट कर रहा है। विष नष्ट होने से मेरे सूक्ष्म सर्प नष्ट हो रहे हैं!

इस बारे में जानने के लिए पढ़ें—नागराज का कहर

अपने शरीर के अंदर बचे सर्पों को बाहर बुलाना होगा, ताकि वे मेरे शरीर पर चिपके प्रतिविष को चाटकर साफ कर सकें!
ओह! ओह! क्या चाल चल रहा है तू? अब तेरे सर्प, एक पाईप का आकार ले रहे हैं! अब ये क्या करेंगे?
प्रतिविष को अपने सर्पों से साफ करवाने से कोई फायदा नहीं होगा, नागराज!
तेरे विष का एक बड़ा भाग तो प्रतिविष ने पहले ही नष्ट कर दिया है!
ओह! गड़ब! मेरे... गुलुप... मेरे मुंह के अंदर प्रतिविष... गुलुप...
तू स्वस्थ और सामान्य हो गया था, हलकाट! और विष हो या प्रतिविष, दोनों ही सामान्य स्वास्थ्यवाले प्राणियों पर बुरा असर डालते हैं!
तू मुझे प्रतिविष से मारना चाहता है नागराज?

मेरे ही बनाए प्रतिविष से मुझे मारना चाहता है। हा हा हा! तेरा प्रतिविष मेरे शरीर में पहुंच तो गया है, लेकिन मुझे नुकसान पहुंचाने से पहले ही मेरा तिलिस्मी शरीर इसकी काट को बनाकर, इसे नष्ट कर डालेगा!
जरूर बनाएगा! यही तो तेरी शक्ति है!
मेरे प्रतिविष की काट है... मेरा विष! तेरा शरीर मेरा विष बना रहा है। पहले मेरा विष तेरे शरीर में घुलेगा!
और फिर तेरा शरीर गलकर पानी बन जाएगा! और इस बार तेरा शरीर इसकी कोई काट तैयार नहीं करेगा! ...
... क्योंकि इस बार तू हथियार से नहीं, अपनी ही बनाई गई काट से मरा है!
अब मैं तेरे षड्यंत्र को तोड़ूंगा, तंत्रता! तेरे सिर को तोड़कर!

बहुत देर हो चुकी है, नागराज! मेरी तंत्र क्रियाएं पूरी हो चुकी हैं! और तुझमें फिलहाल इतनी शक्ति भी नहीं है कि तू मुझे रोक सके!
जय कपालिके!
?
उसे रुक जाना पड़ा-
तू अपने इरादों में कामयाब नहीं होगा नाना!
तू कुछ भी नहीं कर सकता अग्रज! क्योंकि तू आत्मा के रूप में अपने शरीर से जुड़ा हुआ है! और तेरा शरीर मेरे तंत्र के कब्जे में है!
इससे पहले कि मैं तेरी आत्मा को बोतल में बंद कर दूं... हट जा मेरे रास्ते से!
इससे पहले कि तंत्रता की आत्मा, अग्रज के शरीर में घुस पाती-

कभी नहीं नाना! मेरे शरीर का प्रयोग तू अपने गंदे कामों के लिए कभी नहीं कर पाएगा!
ओह! नायक को किसी ने चुनौती दी है!
कोई नई आत्मा है! और यह ज्यादा शक्तिशाली लग रही है!
शायद हमको नया नायक मिलने वाला है!
जो हमको रोकेगा नहीं, बल्कि दुनिया में उत्पात मचाने देगा!
अग्रज की आत्मा, अभी तक तंत्र शक्ति के बल पर अतृप्त आत्माओं पर राज कर रही थी-
लेकिन आज उसका मुकाबला उससे था, जिसने उसको यह तंत्र शक्ति दी थी-
आऽऽऽ ह!
तूने मेरे शरीर पर तंत्र शक्ति से कब्जा किया है नाना, अब मैं तेरे शरीर पर कब्जा करूंगा!
तभी हम दोनों के बीच बराबर की लड़ाई हो सकेगी!
नहीं, मेरे नाती! ऐसा नहीं होगा! तुझे रोकेंगी ये अतृप्त आत्माएं! जो अब मेरी गुलाम हैं! क्योंकि तुझे हराने के बाद मैं बन गया हूं इनका नया नायक!

अग्रज की आत्मा को आत्माएं, दूसरे लोक में खींचती चली गईं-
और कुछ ही पलों बाद- तंत्रता अग्रज के शरीर में प्रवेश कर चुका था-
आऽऽऽह! अग्रज का शरीर इतने दिनों तक रखा रहने के कारण अकड़ गया है!
अग्रज के बाद अब मुझे तेरा शरीर चाहिए नागराज!
तेरे शरीर को मैं अपनी गुलाम आत्माओं के द्वारा अपना दास बनाऊंगा! और पाऊंगा तेरी अद्भुत शक्तियां!
उन शक्तियों से ही अब मैं तेरा असली शरीर नष्ट करूंगा, तंत्रता!
मुझको आभास हो रहा है कि तेरा शरीर नष्ट होने से तेरी शक्तियां भी नष्ट हो जाएंगी!
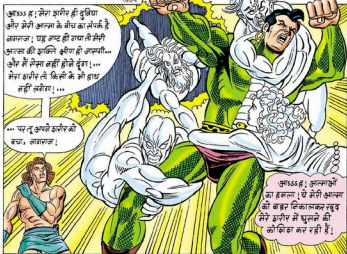
कहानी 19 पेज से जारी

आऽऽऽह! मेरा शरीर ही दुनिया और मेरी आत्मा के बीच का संपर्क है नागराज! यह नष्ट हो गया तो मेरी आत्मा की शक्ति क्षीण हो जाएगी... और मैं ऐसा नहीं होने दूंगा!... मेरा शरीर तो किसी के भी हाथ नहीं लगेगा!...
... पर तू अपने शरीर को बचा, नागराज!
आऽऽऽह! आत्माओं का हमला! ये मेरी आत्मा को बाहर निकालकर खुद मेरे शरीर में घुसने की कोशिश कर रही हैं!

तभी-
नागराज!
कौन?

आहाऽऽऽ तालिस्मान, कहां रह गए थे तुम?
ओह! समझा! अरे, मैं तंत्रता हूं! इसी शरीर को पाने के लिए मुझे तिलिस्म पार करना था!

तुम कौन हो?
अच्छा! मुझे नागराज के एक मणिधारी सर्प ने उलझा रखा था! लेकिन मैंने उसकी मणि छीनकर उसे शक्तिहीन कर दिया!...

...इस वक्त उसके शरीर की चील-कौए खा रहे होंगे! लेकिन नागराज को क्या हुआ है?
मुझे इसका सर्प शक्तियों से भरा शरीर चाहिए! असी मेरी गुलाम आत्माएं इसके शरीर में घुसने की कोशिश कर रही हैं!
लेकिन उससे पहले मुझे अपनी एकमात्र कमजोरी को ठिकाने लगाना होगा! अपने शरीर को किसी ऐसी जगह पर रखना होगा, जहां इस तक कोई न पहुंच सके!
म... मैं भी तुम्हारे साथ चलता हूं तंत्रा!
और नागराज की आत्मा को इसके शरीर से बाहर निकालने का उपाय भी करता चलता हूं!
तुम्हारी गुलाम आत्माएं तो शायद सफलता पाने में देर लगाएं, लेकिन ये रत्न नागराज की आत्मा को तुरंत बाहर खींच लेगा!
फिर तुम्हारी आत्माएं इसके शरीर में घुस सकेंगी!
आऽऽऽह! सचमुच! तालिस्मान का रत्न मेरी आत्मा को खींच रहा है! ...ऐसा नहीं होना चाहिए! वर्ना तंत्रा को कौन रोकेगा?

मैं इस रत्न को अपने शरीर से अलग नहीं कर पा रहा हूं! इच्छाधारी शक्ति का प्रयोग करके देखता हूं!...
...तब शायद यह रत्न मेरे शरीर से अलग हो जाए! हो गया!... लेकिन अब क्या करूं?
अब तो मेरी शक्ति भी जवाब दे रही है! ये आत्माएं मेरे शरीर में घुस रही हैं! और मैं इनसे लड़ नहीं पा रहा हूं! क्योंकि आत्माओं से तो आत्मा ही लड़ सकती है! शरीर नहीं!
तालिस्मान ने अंजाने में मेरी मदद कर दी है! मुझे यह रत्न अपने शरीर में धंसाना होगा! ताकि मेरी आत्मा शरीर से बाहर निकलकर इन आत्माओं से लड़ सके!
आहा! समझ गया!

आऽऽऽहा! इसकी आत्मा तो बगैर हमारे मेहनत किए ही बाहर निकल रही है! चलो, अब फटाफट घुस जाओ इसके शरीर में!
लेकिन-
अरे! अरे! ये क्या? इसके शरीर में से तो और भी आत्माएं निकल रही हैं!
यह असंभव है!
मेरे शरीर में लाखों आत्माएं रहती हैं! और अब वे सभी 'रत्न' के कारण बाहर खिंचकर मेरी आत्मा के साथ मिल रही हैं!
अब मुझमें लाखों आत्माओं की शक्ति है! और तुम सब तो पचास भी नहीं हो!
चले जाओ! वर्ना तुम सबको नष्ट कर दूंगा!

Amaan
तांडव
लातों के 'भूत' भला बातों से कब मानते हैं-
टूट पड़ो इस पर... आऽऽह!
बड़े दिनों बाद उत्पात करने का मौका मिला था, वह भी हाथों से जा रहा है!
पहले वाला नायक अग्रज ही अच्छा था! कम से कम उसने हमको कभी पिटने तो नहीं दिया!
अगर हम इससे पिट गए तो फिर हमको इसे अपना नायक मानना पड़ेगा! दुनिया में तबाही फैलाने का चांस जाता रहेगा!

अभी तो एक ही रास्ता है। फिलहाल इससे झगड़ा नहीं करते हैं! नग नायक से और शक्तियां प्राप्त करके फिर वापस आएंगे!
हां! अभी अपने लोक में वापस भाग चलते हैं!
अपने शरीर को तो मैंने इन दुष्ट आत्माओं से बचा लिया! लेकिन अब मैं खुद अपने शरीर के अंदर कैसे जाऊंगा?
ओह! ये रत्न, 'सर्प-आत्माओं' को खींचकर वापस शरीर में प्रवेश करा रहा है। यानी ये दोनों तरफ से काम करता है। आत्मा को शरीर के बाहर भी भेज सकता है! और आत्माओं को शरीर के अंदर प्रवेश भी करा सकता है!
कुछ ही पलों बाद-
कमाल का है ये रत्न! अरे! यह तो हवा में घुल रहा है! खैर, मैं आत्माओं से बच तो गया, लेकिन तंत्रता को अग्रज का शरीर प्राप्त करने से रोक नहीं पाया!
अपनी असफलता की सूचना मुझे दादा वेदाचार्य को देनी होगी!

वेदाचार्य को नागराज की हार की उम्मीद नहीं थी–
ये तो अनहोनी हो गई, नागराज! अब तंत्रता को कोई रोक नहीं सकता! और अब तो तालिस्मान भी उसके साथ है!
अगर किसी तरह से यह पता चल सके कि तंत्रता ने अपना शरीर कहां पर रखा हुआ है, तो उसको नष्ट करके तंत्रता की शक्तियों को काफी हद तक कम किया जा सकता है!
तंत्रता मूर्ख नहीं है, नागराज! उसने अपने शरीर को किसी अत्यंत दुर्गम स्थान पर रखा होगा!... वहां तक तो पहुंच पाना ही... ओह! किसी का फोन है!
टिर्रर्रर्र
टिर्रर्रर्र
हैलो, दादाजी! मैं निशा हूं! भारती कम्युनिकेशंस से बोल रही हूं!
आप यहां जल्दी आइए! मैडम को न जाने क्या हो गया है! वे बार-बार आत्महत्या करने की कोशिश कर रही हैं!
क्या?

क्या हुआ नागराज ?
भारती, आत्महत्या की कोशिश कर रही है! न जाने उसको क्या हो गया है! आप भी जल्दी 'भारती कम्युनिकेशंस' टॉवर पहुंचिए, दादाजी!
ओफ्! जरूर भारती को अपने जुड़वां भाई का अंजाम सुनकर गहरा धक्का लगा है! तभी वह ऐसी हरकत कर रही है!
लेकिन उस तक खबर पहुंचाई किसने?
भारती सचमुच अपने होशोहवास खो बैठी थी-
ओफ्! ये क्या पागलपन है, मैडम! ये स्प्रे घावों पर डालिए! ये आपका खून बहना रोक देगा!
तब तो ये स्प्रे मेरी जान बचा सकता है!

इसलिए इसको नहीं बचना चाहिए! क्योंकि मुझे अपनी जान गंवानी है! बचानी नहीं है!
तांडव
फिररररा
पकड़ लिया!
अब मैडम को कुर्सी से बांध दो! डॉक्टर बस आते ही होंगे!
डॉक्टर की जरूरत मुझे नहीं...
...तुम लोगों को पड़ेगी!
मुझे तो यमदूतों का इंतजार है!
ही ही ही, ही ही ही!

यमदूत मुझे रास्ते में मिला था! कह रहा था कि वह थोड़ी देर से आएगा!...
...सत्तर-अस्सी साल बाद!
नागराज!
मुझे जान देनी है, नागराज! वह मैं दूंगी! चाहे इसके लिए मुझे तुम्हारी जान ही क्यों न लेनी पड़े!
हां, भारती! मेरे सूक्ष्म सर्प तुम्हारे घाव से खून का बहना तब तक रोके रखेंगे, जब तक तुमको डॉक्टरी सहायता नहीं मिल जाती!
अब बताओ! जान देने का ये पागलपन क्या है?
ओफ्फ!
इतना जबरदस्त वार! भारती में इतनी ताकत कहां से आई?

मैडम पर दौरा सा पड़ा है, नागराज! और दौरे में इंसान की शारीरिक शक्ति अकसर बढ़ जाती है!
ऐसे में डॉक्टर नींद का इंजेक्शन देते हैं! मैं भारती को हल्की विष फुंकार की एक डोज़ दे देता हूं!
DANGER
440V
कुछ भी कर ले, नागराज! लेकिन भारती को मरने से रोक नहीं पाएगा!
असंभव! भारती पर विष फुंकार का कोई असर नहीं हुआ! इसको तो बेहोश हो जाना चाहिए था!
बेहोश हो गई, तो मरूंगी कैसे?
लेकिन तुझे मरना होगा, नागराज! वर्ना तू मुझे मरने नहीं देगा!
DANGER
440V
आऽऽह!

ओह! भारती के इशारे पर इलेक्ट्रॉनिक बॉक्स के तार बाहर आकर मुझे लपेट रहे हैं! और इन झटकों के कारण मैं अपने दिमाग को इतना भी केन्द्रित नहीं कर पा रहा हूं कि इच्छाधारी कणों में बदल सकूं! ...
... कुछ ही पलों में यह उच्च वोल्टेज मुझे जलाकर राख कर देगी!
भारती के पास ऐसी चमत्कारी शक्ति कहां से आई?
ये बाद में सोचूंगा! फिलहाल तो जिन्दा रहने का इंतजाम करना है! ... इस इमारत में लगे कुछ खास सिस्टमों का मुझे पता है!
जैसे ये फायर सेंसर! धुएं का आभास मिलते ही ये बज उठते हैं, और इलेक्ट्रिक सप्लाई को भी बंद कर देते हैं!
मेरी फुंकार, धुएं का काम कर देगी!
फ्ऊ
ओह! इलेक्ट्रिक सप्लाई बंद हो गई! लेकिन भारती कहां गई?
मैडम ऊपर गई हैं, नागराज! कह रही थीं कि 'नीचे कूद जाऊंगी!'
टनननननन
हे भगवान!
भारती को क्या हो गया है? खैर, मैं भारती को मरने तो नहीं दूंगा! ...

तभी-
ओह! भारती पहले ही नीचे कूद चुकी है!
पकड़ लिया! अब कुछ ऐसा इंतजाम करना पड़ेगा कि तुम फिर से आत्महत्या की कोशिश ही न कर पाओ!
लेकिन-
आऽऽऽह! भारती के शरीर में जरूर कोई और शक्ति है! क्योंकि इस बार तो भारती ने हाथ तक नहीं हिलाया!

तू ठीक समझ रहा है नागराज! मैं एक आत्मा हूं! तू मुझे मार नहीं सकता! लेकिन मैं तुझे मार सकता हूं! भारती को बचाने के लिए तू कुछ भी नहीं कर सकता! कुछ भी नहीं!
भारती जमीन से टकराकर मरेगी, और जरूर मरेगी!
भारती के गले से किसी और की आवाज आ रही है! यह जरूर तंत्रता की किसी गुलाम आत्मा का काम है!
मैं तंत्रता की चाल को कामयाब नहीं होने दूंगा, दुष्टात्मा!

भारती, जमीन से नहीं टकराएगी!
तेरी सर्प रस्सी न तो भारती को बचाएगी, और न तुझे बचा पाएगी, नागराज!
ओऽऽऽह! यह न तो मुझे भारती तक पहुंचने दे रहा है, और न ही मेरे सर्पों को! ... और भारती तेजी से जमीन की तरफ गिर रही है! ... एक रास्ता है!
अपनी सर्प शक्ति को क्यों व्यर्थ कर रहा है, नागराज! मैं तेरे किसी सांप को भारती तक पहुंचने नहीं दूंगा!
अच्छा है किंतु यही समझता रह!

क्योंकि मेरा निशाना भारती नहीं, बल्कि वह स्थान है, जहां पर भारती गिरने वाली है! मेरे सर्प, एक सर्प गद्दे का निर्माण करके भारती को बचा लेंगे!
और इससे पहले कि ये आत्मा फिर से भारती के शरीर में घुस पाए, मैं भारती को लेकर यहां से भाग लूंगा! ...
... शायद रास्ते में इस आत्मा को रोके रखने का कोई उपाय सूझ जाए!
ओह! पास में ही तैनात एक जासूस सर्प सन्देश भेज रहा है!
सन्देश के निर्देश के अनुसार भागते हुए नागराज का पीछा...
... वह आत्मा नहीं कर पाई—
आह! कोई दीवार मुझे रोक रही है! ...
... किसने खड़ी की है ये दीवार?
मैंने!

वेदाचार्य के तिलिस्म ने! मैंने नागराज के जासूस सर्प द्वारा नागराज को मानसिक सन्देश देकर इस तरफ इसीलिए बुलाया था, ताकि नागराज का पीछा करते करते तू चूहे की तरह इस तांत्रिक पिंजरे में आ फंसे!
अब तेरा असली रूप देखता हूं! कहीं तू तंत्रता की आत्मा ही तो नहीं है!
दिखा, अपना असली रूप!
आऽऽऽह!
आत्मा के चमकते चेहरे पर नक्श उभरने लगे-
अग्रज!... तू... तू जान ले रहा था भारती की! अपनी बहन की!
जुड़वां बहन की, दादाजी! वह भी दुनिया के भले के लिए! जुड़वां बच्चों के अंदर एक ही आत्मा के दो भाग होते हैं! इसीलिए मैं भारती की आत्मा से अपनी आत्मा जोड़ना चाहता था, ताकि शक्तिशाली होकर तंत्रता से अपना शरीर छीन सकूं!...
...और उसको दुनिया में तबाही फैलाने से रोक सकूं!

मैं बड़ी मुश्किल से तंत्रता की गुलाम आत्माओं के चंगुल से निकलकर आ पाया हूं! जल्दी ही तंत्रता उनको मेरी तलाश में भेजेगा! और इस बार अगर मैं उनके चंगुल में फंस गया तो फिर कभी बाहर नहीं निकल पाऊंगा! मेरे पास एक ही मौका है, और एक ही तरीका है! मुझे भारती की आत्मा हासिल करनी ही होगी!

...लेकिन इस तंत्र ज्ञान का उपयोग करने के लिए तुमको अपना नहीं, तंत्रता का शरीर हासिल करना होगा... क्योंकि अपने शरीर में तुम अब प्रवेश कर ही नहीं सकते! तंत्रता के तंत्र के कारण!

तंत्रता ने अपना शरीर किसी अत्यन्त गुप्त स्थान पर रखा है! एक तो उसका पता चलना ही मुश्किल है, दूसरे उसको हासिल करना असंभव है!

मैं लाऊंगा तंत्रता का शरीर तुम्हारे पास अग्रज! यह नागराज का वादा है!

और तब तक तंत्रता की गुलाम आत्माओं से मैं तुमको सुरक्षित रखूंगा! यह वेदाचार्य का वादा है!

पागल मत बनो, अग्रज! तंत्रता से तुम जरूर जीत सकते हो, क्योंकि तंत्र शक्ति में तुम्हारा ज्ञान उसके बराबर है!...

दुनिया वालों को घुटने टेकने का इशारा होगा यह! हर तरफ आत्माएं तांडव करेंगी! और इस तांडव को रोक पाने का इंसानों के पास कोई भी रास्ता नहीं होगा!...
... ऐसे हमको अमृत भी मिलेगा, और मानवों की गुलामी भी!
लेकिन तुमको यह भी पता होगा तंत्रता, कि इन्हीं आत्माओं को नागराज, तिलिस्म में भागने को विवश कर चुका है!
इससे पहले कि वह दुबारा ऐसा कर सके, मुझे उसको मारने के लिए जाने का आदेश दो!
हुम्म! नागराज खतरनाक तो है! उसका मरना जरूरी भी है! ठीक है! जाओ तालिस्मान, खत्म कर दो नागराज को!
इसी वक्त-
नहीं! तंत्रता का कोई पता नहीं चल रहा है!
और गुलाम आत्माओं का तांडव शुरू हो चुका है दादाजी! वे मेरी तलाश में चारों तरफ विध्वंस मचा रहे हैं!
ये आत्माएं ही तंत्रता तक पहुंचने का जरिया हैं! मैं इन आत्माओं से तंत्रता का पता मालूम करूंगा!

और मैं एक खास तिलिस्म की रचना करूंगा, जो इन आत्माओं को विचलित करके तबाही करने से भी रोके रखेगा, और अग्रज की आत्मा तक पहुंचने से भी!
अतृप्त आत्माओं का तांडव शुरू हो चुका था-
ओह! मैंने इतनी खराब स्थिति की आशा नहीं की थी! यहां पर तो आत्माओं का हुजूम है! इनको मैं रोकूंगा कैसे?
और कैसे जानूंगा इनसे तंत्रता का पता?

तुम्हें तंत्रता का पता मैं बताऊंगा नागराज! तू दूसरी दुनिया में जा!...
... तंत्रता तुम्हें कुछ समय बाद वहीं पर मिलेगा! जब वह इस दुनिया के साथ-साथ उस दुनिया का मालिक भी बन चुका होगा!
तंत्रता की नजरें भी, इसी दृश्य पर गड़ी हुई थीं-
जैसे ही तू मरेगा, मैं तेरी आत्मा को भी गुलाम बना लूंगा, नागराज!
लेकिन तभी-
अरे! यह... यह मेरी गुलाम आत्माएं क्या हो रहा है? भाग क्यों रही हैं?
तालिस्मान?
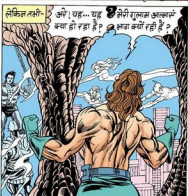
जल्दी ही- तंत्रता ने भगदड़ का कारण भी ढूंढ लिया-

महानगर से उठकर कोई तीखी महक पूरी दुनिया के वातावरण में फैल रही है, और इस महक से घबराकर गुलाम आत्माएं वापस अपने लोक में भाग रही हैं...

... यह काम वेदाचार्य के अलावा और किसी का हो ही नहीं सकता!
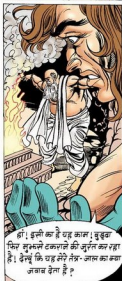
हां! इसी का है यह काम! बुड्ढा फिर मुझसे टकराने की जुर्रत कर रहा है! देखूं कि यह मेरे तंत्र-जाल का क्या जवाब देता है?

तिलिस्मी यज्ञ करते वेदाचार्य एकाएक चौंक उठे-

अरे! बाहर रोशनी एकाएक तेज क्यों हो गई?

बाहर अवश्य कोई नई विपत्ति खड़ी हो रही है!

बाहर निकलते ही वेदाचार्य भौचक्के रह गए-

ओह! यह जरूर तंत्रता का तंत्र वार है। वर्ना कौन पैदा कर सकता है...

...आकाश में दूसरा सूर्य !
दो सूर्यों की गर्मी ने पूरी दुनिया में त्राहि- त्राहि मचा दी-
BUS
सुनो, दुनिया भर के इंसानों! एक सूर्य तुमको उस भगवान ने दिया है, जिन्दगी के लिए! और दूसरा सूर्य तंत्रता ने तुमको दिया है... मौत के लिए! ...
...और इस मौत से तुम सबको तंत्रता बचा सकता है! और कोई नहीं! मान लो मुझे अपना भगवान! भक्ति करो मेरी! मेरी सत्ता को मानो! तब मैं तुमको जिन्दगी दूंगा! वर्ना दूंगा मौत!

तुम सबके पास सिर्फ एक दिन का समय है! फिर मैं पूरी धरती का पानी सुखा दूंगा, और तुम सब तड़प-तड़प कर मरोगे!
सभी लाचार थे-
तंत्रता यह सब मुझे ढूंढने के लिए कर रहा है, दादाजी!... मुझे तबाही रोकने के लिए उसके पास जाना ही होगा!
ये तबाही हथियार डालने से बन्द नहीं होगी!
सामना करने से बन्द होगी!
हम सब बेबस जरूर हैं! लेकिन नागराज कभी बेबस नहीं हो सकता! वह बचाएगा दुनिया को मौत के इस तांडव से!
वह तोड़ेगा तंत्रता का जाल!
जाल तोड़ने की शुरुआत हो चुकी थी-
तालिस्मान! तू...तू नागराज को यहां क्यों ले आया मूर्ख?

म... मैं इसको यहां नहीं लाया हूं तंत्रता! बल्कि... आऽऽऽह!... ये... ये मुझे लाया है!
पहले-
पहले तो ये न जाने कैसे मेरे बंधनों से आजाद हो गया! और... और फिर मुझ पर विष फुंकार छोड़ी! और... एक सूक्ष्म नाग को मेरे दिमाग में भेजकर मेरे विचार जान लिए! इससे इसको यहां का रास्ता भी पता चल गया!...
अब मैं भी जानता हूं तंत्रता! ये मशाल है तुम्हारे तंत्र गढ़ में प्रवेश करने का गुप्त यंत्र, जहां पर तुम्हारा शरीर रखा हुआ है!
...और तुम्हारे शरीर तक पहुंचने का रास्ता भी!
जिसे या तो तुम जानते हो, और या फिर मैं!
और ये तस्वीर है उस 'तंत्र-गढ़' का द्वार!
ये तस्वीर...

... जो मशाल लेकर प्रवेश करने वाले के लिए, वास्तविक दृश्य बन जाती है!
ओफ़!
नागराज, तस्वीर में प्रवेश कर गया!
लेकिन जो हुआ, अच्छा ही हुआ! नागराज अब हमेशा के लिए मेरे रास्ते से हट जाएगा! ये तस्वीर ही तंत्र-गढ़ में जाने और आने का एकमात्र रास्ता है! ...
... जब ये तस्वीर नष्ट हो जाएगी, तो नागराज कभी 'तंत्र-गढ़' से बाहर नहीं आ पाएगा! हमेशा के लिए वहीं कैद होकर रह जाएगा!
ऐसा नहीं होगा, तालिस्मान! नागराज को खत्म करने वाला, तंत्र-गढ़ में मौजूद है!
तुमने तस्वीर को नष्ट क्यों कर दिया तंत्रता? अब तुम खुद भी अपने शरीर तक नहीं पहुंच पाओगे! अगर नागराज ने तुम्हारे शरीर को ढूंढकर नष्ट कर दिया, तो तुम्हारी तंत्र शक्ति भी क्षीण हो जाएगी!

नागराज एक अनोखे स्थान पर पहुंच चुका था-
अजीब सी जगह है ये! हर चीज जीवित सी लग रही है! खंभे, दीवारें और जमीन में भी धड़कन सी महसूस हो रही है!

और इस भूल-भुलैया में तंत्रता का शरीर कहां पर रखा होगा, यह कैसे पता चलेगा?
ओफ़! ये तेज हवा! मशाल बुझ गई, और मेरा भी दम घुट रहा है!...
...और अब चारों तरफ से दीवारें मुझे दबा रही हैं! पीस रही हैं! समझ गया!
तंत्रता ने 'तंत्र-गढ़' को इन्सानी शरीर की अंदरूनी संरचना के आधार पर बनाया है!... और मैं इस वक्त फेफड़ों के अन्दर हूं!
और अगर मेरा सोचना ठीक है, तो तंत्रता का शरीर इस गढ़ में एक ही स्थान पर रखा हो सकता है। वहां पर, जहां इन्सानी शरीर में गर्भाशय होता है!
तभी फेफड़ों से निकलती कॉर्बन-डाई-आक्साइड से मशाल भी बुझ गई, और मेरा दम भी घुटने लगा!
तंत्रता का शरीर अवश्य वहीं रखा होगा!
लेकिन वहां तक पहुंचने के लिए मैं यहां से कैसे निकलूंगा?

...बाहर निकलने का एकमात्र रास्ता सिकुड़कर बन्द हो चुका है! और इस लचीली दीवार को मेरे हाथ खिसका नहीं सकते! यानी अब शक्ति परीक्षण का समय आ गया है!
इस तांत्रिक फेफड़े के खिलाफ मेरे फेफड़ों की शक्ति!
मुकाबला जबरदस्त था! लेकिन विजेता तो एक ही हो सकता था-
आह! मेरे फेफड़ों की हवा खत्म हो रही है! लेकिन बाहर जाने का द्वार भी खुल रहा है! अब मैं इच्छाधारी कणों में बदलकर...
...यहां से निकल सकता हूं! आऽऽऽ हा! पहले एक लम्बी सांस ले लूं! फिर गर्भाशय तक का रास्ता तलाश करता हूं!
जितनी सांसें ले सकता है, ले ले...

... क्योंकि इसके बाद तू कभी सांस नहीं ले पाएगा!
आऽऽऽह!
मैं सोच ही रहा था कि यह 'तंत्र-गढ़' खाली क्यों है? तंत्रता ने अपने शरीर की सुरक्षा का इंतजाम किया हुआ है। और इसका हड्डियों से बना हथियार काफी खतरनाक लग रहा है!

आssss ह! तंत्र ऊर्जा से भरा हुआ है ये 'अस्थि-वार'! मेरा पूरा शरीर कांप गया!
विष फुंकार से ये विचलित हो रही है! फुंकार को और तीव्र करता हूं!
फ्फ्फ़्फ़
लेकिन-
अरे! य... यह क्या? ये तो दीवार में समा गई! लेकिन दीवार में समाकर गई कहां होगी?
कहीं नहीं! मैं तंत्र-गढ़ की दीवारों में बहते जीवन द्रव के साथ बह-कर कहीं भी जा सकती हूं! और कहीं से भी बाहर निकल सकती हूं!

ओऽऽऽ ह! ऐसे दुश्मन से कैसे लड़ा जाए जो मेरे वार तो आराम से बचा सकता है!
लेकिन जिसके वार से मैं नहीं बच सकता! आऽऽऽ ह!
इसकी शक्ति यह तंत्र-गाद और इसके अंदर बहने वाला 'जीवन द्रव' है, जिसके साथ यह बहकर कहीं भी पहुंच सकती है! इसकी इस शक्ति को नष्ट करने के लिए 'जीवन द्रव' का बहाव रोकना होगा! शरीर की संरचना पर आधारित इस तंत्र-गाद में 'जीवन द्रव' को गति देने वाला अंग 'हृदय' ही हो सकता है! अगर मैं फेफड़ों के पास हूं, तो हृदय को इधर होना चाहिए!...
... और 'हृदय' के नष्ट होते ही 'जीवन द्रव' का प्रवाह रुक जाएगा!...

...और इस 'तांत्रिकप्राणी' की इधर-उधर भाग सकने वाली शक्ति भी समाप्त हो जाएगी!
ओह! मैं विचरण नहीं कर पा रही हूं! मेरी गति समाप्त हो गई है!...
... लेकिन एक शक्ति नष्ट होने से कुछ नहीं होगा! तू बचेगा नहीं!
गलत!
तेरे 'तंत्र वार' को नागफनी सर्प रोक लेगा!...
आऽऽऽऽह!
... लेकिन तेरा 'अस्थि शस्त्र' मेरी फुंकार को रोक नहीं पाएगा!
ये तो बेहोश हो गई!

अब मुझे गर्भाशय तक पहुंचकर तंत्रता का शरीर हासिल करना होगा! और वह भी तुरन्त! क्योंकि 'तंत्र गद' का हृदय नष्ट होने के बाद 'तंत्र गद' गलकर नष्ट होना शुरू हो गया है!
गर्भाशय में-
यह रहा तंत्रता का शरीर!
नागराज ने 'निकास द्वार' तक पहुंचने में देर नहीं लगाई-
लेकिन-
अरे! द्वार तो यहां से गायब हो चुका है! अब... अब मैं यहां से कैसे निकलूंगा?... तंत्र गद बहुत तेजी से गल रहा है! जल्दी ही मैं इस में दफन हो जाऊंगा! और तंत्रता के शरीर के साथ-साथ दुनिया को बचाने का एकमात्र तरीका भी मेरे साथ ही दफन हो जाएगा!

नागराज का तंत्र गढ़ से बाहर निकल पाना अगर असंभव था, तो दुनिया का बच पाना भी असंभव था-
हा हा हा! अब गर्मी असह्य हो गई है!
नदी- तालों का पानी सूख गया है!
इंसान और पशु दोनों ही झुलस रहे हैं...
...अब इंसान या तो तंत्रता की गुलामी कुबूल करेगा, या तड़प-तड़प कर मरेगा!
लेकिन... लेकिन... ये क्या हो रहा है? तंत्र सूर्य पर एक काली छाया छाती जा रही है। ग्रहण लग रहा है मेरे सूर्य को! अब इसकी गर्मी पृथ्वी तक पहुंच नहीं पाएगी! लेकिन ये ग्रहण किसने लगाया है! किसमें है इतनी तंत्र शक्ति जो तंत्रता को चुनौती दे सके!
मुझमें तंत्रता!
तू... तू तो अग्रज है! मेरे शरीर में घुसा हुआ है! लेकिन... लेकिन मेरा शरीर 'तंत्र गढ़' से बाहर कैसे आया?
बाहर आने का एकमात्र रास्ता वह तस्वीर तो मैंने तोड़ दी थी!

उसके टूटे टुकड़ों को मैंने अपनी शक्ति से फिर से जोड़ दिया था, तंत्रता! नागराज इसी तस्वीर के द्वार से तुम्हारा शरीर लेकर बाहर आया है!

तूने? ये काम तूने किया? विश्वासघात किया! लेकिन क्यों, तालिस्मान क्यों?

क्योंकि मैं तालिस्मान नहीं हूं, भाई! मैं तो नागू हूं, नागू! तालिस्मान तो मुझसे तभी पिट गया, जब मैंने उसकी ही किरण का वार उसी के दर्पण से परावर्तित करके उस पर कर दिया था! तालिस्मान भाई होश खो बैठे! और मैं बन गया तालिस्मान!

ताकि तुमको धोखे में डालकर तुमको पकड़ सकूं!

फिर जब मैं नागराज द्वारा तोड़े गए तिलिस्म के रास्ते से अंत तक पहुंचा तो मैंने देखा कि तुम काफी शक्तिशाली हो गए थे! मैंने तुम्हारे साथ पंगा लेने के बजाय तुम्हारे साथ चिपके रहने की ठान ली! तुम्हारा शरीर तुम्हारी कमजोरी था! और तुम्हारे साथ रहकर मैंने यह देख लिया कि तुमने उसको कहां रखा था!

नागू एवं तालिस्मान की मुठभेड़ के विषय में जानने के लिए पढ़ें –नागराज का कहर

ये घटिया सी चाल चलकर तुम सब अपने को जीता हुआ और मुझे हारा हुआ समझ रहे हो! लेकिन यह तुम सबकी भूल है! तंत्रता तुम्हारे जैसे तीन तो क्या तीन लाख से एक साथ निपट सकता है!

तू तीन लाख से लड़ सकता है तो मैं दस लाख के बराबर हूं, तंत्रता! मुझसे जीतकर दिखा!

मेरी बिल्ली और मुझसे ही म्याऊं? अरे मूर्ख नाती, अगर मेरे बूढ़े शरीर में इतनी तंत्र शक्ति होती, तो उसको मैं भला तेरे शरीर से बदलता ही क्यों? तू कुछ नहीं कर पाएगा!...

...सिवाय मेरा गुलाम बनने के!

आऽऽऽह!
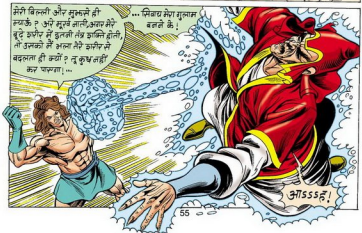
आऽऽऽह!
अग्रज के शरीर में घुसकर तंत्रता बहुत शक्तिशाली हो गया है, नागराज! अग्रज तो इसके सामने पल-भर भी टिक नहीं पाया!
आऽऽऽह! इसका 'तंत्रखोल' तो जानलेवा है। सारे शरीर में तलवारें सी घुसती महसूस हो रही हैं! ...और मेरी कोई भी नागशक्ति इस कवच के बाहर नहीं जा पा रही है!
मेरी 'मणि-किरणों' का भी यही हाल है!
कुछ ही पलों में हम खत्म हो जाएंगे नागराज!
एक हथियार है, नागू! जो शायद हमको बचा सके! ये चाबी!
शायद तंत्रता का बनाया हथियार, तंत्रता पर असर कर सके!
हा हा हा हा! ये चाबी मुझ पर भला क्या असर करेगी, नागराज?
तंत्रता के चाबी पकड़ते ही-

और तस्वीर एक बार फिर टुकड़ों में बंट गई-

अब तंत्रता हमेशा के लिए अपने 'तंत्र-गढ़' में ही कैद रहेगा! पता नहीं, गलते तंत्र गढ़ में वह जिन्दा रह पाएगा भी या नहीं!

रहे या न रहे, नागराज! लेकिन तुमने तंत्रता को हराने का जो तरीका ढूंढ़ निकाला, वह अद्भुत था!

मैं तो आखिर तक यही समझता रहा कि तुम तंत्रता का सिर चाबी से फोड़ना चाहते हो!

तंत्रता भी यही समझ रहा था! इसीलिए वह मात खा गया! और उसके गायब होते ही उसका तंत्र भी नष्ट हो गया!

लेकिन एक समस्या भी खड़ी हो गई है!

मेरा शरीर भी हमेशा के लिए 'तंत्र-गढ़' में कैद हो गया है! अब मेरा अंतिम संस्कार नहीं हो पाएगा!

और मुझे हमेशा के लिए पृथ्वी पर अतृप्त आत्मा बनकर ही भटकना पड़ेगा!

समाप्त.